वस्त्र का रंग और उपभोक्ता

कुछ कपड़ों को छोड़कर, शेष सभी पर कुछ-न-कुछ, कहीं-न-कहीं, रंग को अवश्य ही स्थान मिलता है। रंग के पक्केपन का सीधा सम्बन्ध देख-रेख की प्रक्रियाओं (care practices) से है। इसके अंतर्गत धोने, ड्राईक्लीन करने, आयरनिंग और प्रेसिंग में रंग गिरने के प्रति प्रतिरोधकता के विषय पर प्राय: विचार किया जाता है। दाग-धब्बे छुड़ाने में अक्सर जिन रसायनों और विधियों का प्रयोग किया जाता है उनके प्रति भी रंग का पक्कापन होना चाहिए। वाष्प को भी प्राय: कपड़ों पर प्रयोग किया जाता है उसके प्रति भी पक्कापन होना जरूरी है। सभी कपड़ों को किसी-न-किसी विधि से स्वच्छ करना पड़ ही जाता है। कपड़ों को किसी भी विधि से धोने योग्य (washable) या सूखी विधि से धोने योग्य (dry cleanable) या दोनों प्रकार का होना चाहिए। धोने और ड्राईक्लीन करने की विधियाँ तरह-तरह की होती हैं। रंग और पिगमेंट का प्रयोग इन सब बातों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए तथा रंग चढ़ाने की प्रक्रिया और विधि भी ऐसी होनी चाहिए जिससे कि वस्त्र इन सब 'केयर प्रैक्टीसेज' से अप्रभावित रहें। ऐसा हो, तब ही वस्त्र उपभोक्ता के प्रयोग में अधिक दिन तक रह सकता है। हल्के और कोमल रचना के कपड़ों पर (जिन्हें प्राय: हल्के हाथों से ही धोया जाता है) हल्के डिटरजेन्ट और हल्के गर्म पानी को सहन करने की क्षमता से युक्त रंगों का प्रयोग किया जाता है तो अच्छा रहता है। कठिन कामों में (for hard use) और खेल आदि में जो कपड़े प्रयोग किए जाते हैं उन्हें कठोर विधि (rigorous washing

Scanned with CamScanner

procedure) से धोया जाता है। उनके रंग को, पूरे गर्म पानी और सब तरह के साबुन और डिटरजेंट को सहन करने की क्षमता से युक्त होना चाहिए।

एसिड और अल्कली के प्रति भी वस्त्र के रंग में पक्कापन होना जरूरी है। पसीना पहले एसिड प्रकृति का रहता है, परन्तु, बैक्टीरिया द्वारा विबंधित हो जाने पर एल्कलाइन हो जाता है। अधिक समय तक वस्त्रों में रह जाने पर उसकी क्षारीयता बढ़ती जाती है और "The greater the alkalinity, the greater and quicker the fabric damage and colour fading." यह बात उद्योगों में लगे श्रमिकों की पोशाकों के लिए भी जरूरी है क्योंकि इन्हें कमर्शियल लौंड्री में धुलवाना पड़ता है। पसीना, पसीना रोकने की दवा (Antiperspirants), दुर्गंधहर (deoderants), सेन्ट या खुशबू (scent and perfumes) के प्रति प्रतिरोधकता, परिधान के वस्त्रों के रंगों (wearing apparels) में होना जरूरी है। घरेलू प्रयोग के वस्त्रों जैसे अपहोल्सटरी, स्लीपकवर, आदि में रंग गिरने (Crocking and Rubbing) से बचाव की व्यवस्था होना जरूरी है। यदि उसमें से पहली बार में ही प्रयोग में या धुलने में रंग गिरने लगता है तो फिर उसके बाद भी गिरना और टूटना जारी रहता है। प्रकाश के प्रति रंग का पक्कापन होना परदे, ड्रेपरी, अपहोल्सटरी, रग (Rugs) आदि के लिए जरूरी है। इसके अतिरिक्त कल-कारखानों के क्षेत्र में रहनेवालों के वस्त्रों के रंगों में वायु-प्रदूषण (air-contaminants) का निरन्तर सामना करने की क्षमता रहना जरूरी है। इन सब के अलावा अनेक ऐसी बातें जीवन में आती हैं जो वस्त्र के रंग (dye-sublimation) को हल्का या गाढ़ा कर देती हैं। समुद्र के पानी के लगातार स्पर्श से भी कपड़ों का रंग धुँधला पड़ जाता है। इन सब कारणों से वस्त्रों का सौन्दर्य कम हो जाता है जो उपभोक्ता को सहन नहीं होता है। अतः रंग का पक्का होना और उपर्युक्त वर्णित बातों से अप्रभावित रहना, उपभोक्ता की नजर में एक बड़े ही महत्त्व की बात है। फलतः उपभोक्ता को चुनाव में, विभिन्न परिस्थितियों में प्रयोग किए जानेवाले वस्त्र के रंग के पक्केपन की जाँच कर लेनी चाहिए। रंग के पक्केपन और स्थायित्व को कई तत्त्व प्रभावित करते हैं। पहली बात है कि वस्त्र की रासायनिक रचना (chemical structure), दूसरी बात कि रंग की रासायनिक रचना, तीसरी बात है कि रँगाई और छपाई में प्रयोग होनेवाला सहायक रसायन (The addition of chemical additives or substances) तथा चौथी बात है कि रँगने और छापने की विधि तथा तकनीक (Methods and techniques of colour application)। वैसे तो वस्त्रों की रँगाई और छपाई एक 'Complex Technology' द्वारा होती है परन्तु उपभोक्ता को पहनने, प्रयोग करने और रखरखाव (wear, use and care) की दृष्टि से इस सम्बन्ध में थोड़ी-बहुत जानकारी रखना, अच्छा ही सिद्ध होगा। वैसे उपभोक्ता रंग के पक्केपन और टिकाऊपन की जाँच कई एक घरेलू विधियों से भी कर सकता है। जाँच कपड़े के उपयोग और प्रयोजन के अनुसार की जाती है।

वस्त्रों के रंग एवं छापे कितने ही सुन्दर और अपूर्व क्यों न हों, उपभोक्ता की दृष्टि में उसका महत्त्व तभी होता है जब यह निश्चित रूप से मालूम हो जाय कि वे पक्के हैं तथा स्थायी, स्थिर और टिकाऊ हैं। जिन परिस्थितियों में भी उनका

Scanned with CamScanner

प्रयोग हो, वे उनका सामना कर सकें और धुँधले न पड़ें। रंग का पक्कापन सामान्य धुलाई, इस्तिरी, वाष्पन, पसीना, तीव्र प्रकाश, पेट्रोल से धुलाई, आदि कई दृष्टिकोणों से देखा जाता है। रंग के पक्केपन की जाँच सरकारी स्तर पर हो तो देश के व्यापारिक स्तर को ऊँचा रखा जा सकता है। उपभोक्ता अपनी चुकाई हुई कीमत का पूरा मूल्य प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि रँगे और छपे वस्त्रों की कार्य-क्षमता और सेवा-क्षमता रंग के पक्केपन पर निर्भर करती है। धुलाई अथवा किन्हीं अन्य कारणों से यदि वस्त्र का रंग धुँधला पड़ जाता है, तो पहननेवाले को भी अच्छा नहीं लगता है और देखनेवाले को भी भद्दा प्रतीत होता है। भद्दे रंग के वस्त्रों में सम्पूर्ण व्यक्तित्व ही बेढब और विद्रूप-सा प्रतीत होने लगता है। पक्के रंग के वस्त्र हर धुलाई के बाद नवीनता लिए, ताजगी से भरपूर होकर निखरते हैं तथा पहननेवाले के व्यक्तित्व को चार चाँद लगाते हैं। निष्कर्ष यह है कि तन-मन को इतना अधिक प्रभावित करनेवाले रंग यदि वस्त्र से छूटने लगें, तो ऐसे वस्त्रों में लगाया गया धन और श्रम भी नष्ट हो जाता है। अतः उपभोक्ता को वस्त्रों का चयन एवं क्रय करते समय रंग के पक्केपन की जाँच कर लेनी चाहिए। परीक्षण की ऐसी विधियाँ हैं जिन्हें आसानी से घर पर भी आजमाया जा सकता है। रंग की जाँच कई दृष्टियों से की जाती है। वस्त्र के प्रयोजन के अनुसार रंगों की जाँच करनी चाहिए। रंगों के पक्केपन की आवश्यकता विविध प्रयोग के कपड़ों में अलग-अलग प्रकार की होती है। जैसे परदों को सदैव, तीव्र प्रकाश, सीधी धूप और तेज हवा का सामना करना पड़ता है। अतः इनके लिए प्रकाश के प्रति पक्कापन देखना चाहिए। पहनने के कपड़े शरीर पर रहने के कारण, पसीने के सम्पर्क में, काफी समय के लिए आते हैं। अतः इनमें पसीने के सम्पर्क में रहते हुए उससे अप्रभावित रहने का गुण देखना चाहिए। इस तरह से प्रयोग और प्रयोजन ही इस बात का निर्णय लेने का आधार है कि उनके रंग को किसके प्रति पक्का रहना जरूरी है। रंग के पक्केपन को जाँचने की विधियाँ निम्नांकित हैं। यथा :

1. **धोने की दृष्टि से पक्कापन** (Fastness for washing) : धोने की दृष्टि से वस्त्र का रंग पक्का है कि नहीं, इसको जाँचने के लिए वस्त्र के एक छोटे से टुकड़े को धोकर, गीला रहने पर ही, सफेद कपड़े के नीचे रखकर गरम इस्तिरी से दबाकर देखना चाहिए। यदि रंग कच्चा होगा, तो श्वेत वस्त्र पर रंग की झलक दिखाई देने लगेगी। इससे भी ज्यादा कड़ी जाँच जेवेल वाटर में डालकर की जाती हैं, क्योंकि ऐसे ब्लीच का प्रयोग प्रायः व्यापारिक लौंड्री में किया जाता है।

2. **इस्तिरी की दृष्टि से पक्कापन** (Fastness for ironing) : वस्त्र का रंग इस्तिरी करने से छूटेगा तो नहीं, इसे देखने के लिए वस्त्र के एक टुकड़े को धोने के बाद उस पर खूब गरम इस्तिरी रखनी चाहिए। कुछ देर बाद इस्तिरी हटाकर इस टुकड़े का मूल वस्त्र से तुलनात्मक मिलान करना चाहिए। दोनों का रंग समान प्रतीत हो तो समझ लेना चाहिए कि रंग पक्का है।

3. **वाष्पन की दृष्टि से पक्कापन** (Fastness for steaming) : वाष्पन की दृष्टि से रंग के पक्केपन की जाँच के लिए वस्त्र के दोनों ओर श्वेत वस्त्र का

Scanned with CamScanner

टुकड़ा लगाकर गरम चाय की केतली पर तान देना चाहिए। यदि रंग कच्चा होगा; तो दोनों ओर के श्वेत वस्त्र पर रंग की झलक दिखाई देने लगेगी।

4. प्रकाश की दृष्टि से पक्कापन (Fastness for Light): घरेलू प्रयोग के कुछ वस्त्र ऐसे भी होते हैं, जिन्हें बराबर खुले प्रकाश में रहना पड़ता है; जैसे परदे आदि। प्रायः सभी वस्त्रों को धोने के बाद धूप में सुखाना पड़ता है। अतः धूप और प्रकाश के प्रति पक्केपन की जाँच करना जरूरी है। इसके लिए वस्त्र के टुकड़े के आधे भाग को अपारदर्शी कागज से ढँक कर बीस दिन तक धूप में रखना चाहिए। बीस दिन बाद दोनों के रंग का तुलनात्मक मिलान करने से पता लगता है कि यदि रंग पक्का है, तो वस्त्र के दोनों भाग का रंग समान होगा। यदि खुला भाग ढँके भाग से हल्का पड़ गया है तो इसका अर्थ है कि उस वस्त्र के परदे बनाने से कुछ ही समय बाद उनका रंग बिगड़ कर मलिन हो जायगा। भद्दे रंग किसी को भी अच्छे नहीं लगते हैं। इस प्रकार की जाँच को कम समय में प्रयोगशाला में 'फेड-ओमेटर' (Fade-ometer) नामक यंत्र की सहायता से किया जाता है।

5. पसीने की दृष्टि से पक्कापन (Fastness for perspiration): अधिकांश परिधानों का सम्पर्क त्वचा से रहता है। अतः उनपर पसीने के प्रभाव को देखना आवश्यक हो जाता है। जिन वस्त्रों का रंग पसीने से प्रभावित होनेवाला होता है, वे प्रयोग के बाद चित्तीदार हो जाते हैं और उनका सौन्दर्य नष्ट हो जाता है। पसीने की दृष्टि से वस्त्र के पक्केपन को जाँचने के लिए, वस्त्र के टुकड़े को किसी क्षीण अम्ल (Weak-acid), जैसे तनु एसिटिक एसिड (Diluted acetic acid) के घोल में दस मिनट तक डुबोकर रखना चाहिए। कपड़े को रगड़ने या मलने की आवश्यकता नहीं है। तदुपरान्त कपड़े में लपेटकर धीरे-धीरे सूखने के लिए रख देना चाहिए। सूख जाने पर इसे मुख्य वस्त्र से मिलाकर देखना चाहिए। यदि दोनों का रंग समान रहे और श्वेत कपड़े पर कोई रंग न दिखाई दे, तो इस वस्त्र को पसीने की दृष्टि से पक्का समझना चाहिए।

रंगों के प्रकार, रंगों के स्थायीपन, रंग चढ़ाने की विधि एवं रंग के पक्केपन को जाँचने की विधियों से परिचित उपभोक्ता ही लेबुल पर इंगित किए हुए संकेतों को समझ सकता है। गृहिणी के लिए तो वस्त्र-विज्ञान का ज्ञान इन कारणों से अनिवार्य है; क्योंकि वस्त्रों को खरीदना, उन्हें धोना, रखना, उनकी देखरेख करना आदि सब काम उसे स्वयं ही करने पड़ते हैं। घर के बजट में, रंग गिरे हुए, नए ही परदों को हटाकर, तत्काल पुनः खरीदकर बदलने की गुंजाइश नहीं रहती है। इसी प्रकार, धुँधले पड़े रंगों के परिधान, अर्थात् बदरंग कपड़ों को पहनना कोई भी पसन्द नहीं करता है। निष्कर्ष यह है कि लेबुल पढ़ना, समझना और उसके अनुकूल वस्त्र की देख-रेख करना आदि बातें वस्त्र के टिकाऊपन, सेवा-क्षमता तथा कार्य-क्षमता को प्रभावित करते हैं। अतः सरकारी निदेश के अनुसार हर वस्त्र पर उसके बनाने, रँगने, परिसज्जा देने तथा अन्य सभी प्रक्रियाएँ देने और देखरेख, संरक्षण आदि करने की विधियों का उल्लेख रहता है। ऐसे वस्त्र, जिनकी कार्य-क्षमता अधिक होती है खरीदनेवाले को संतोष प्रदान करते हैं।

Scanned with CamScanner